



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वाराणसी जनपद के डोम जातियों का अध्ययन: (कोविड-19 के विशेष संदर्भ में)

¹Dr.Amarnath Paswan, ²Shashank Shukla

¹Assistant Professor, ²M.Phil Research Scholar

¹Center for Study of Social Exclusion and Inclusive Policy,

¹Banaras Hindu University, Varanasi, India

सारांश:

प्रस्तुत अध्ययन वाराणसी के मणिकर्णिका घाट एवं हरिश्चंद्र घाट पर पारंपरिक व्यवसाय शवदाह के माध्यम से जीवननिर्वाह करने करने वाले डोम जाति पर आधारित है जो हिंदू जाति व्यवस्था में भी सर्वाधिक निम्न पायदान पर स्थिति हैं। अध्ययन का उद्देश्य कोविड-19 के दौरान दाह संस्कार और परिवार के जीविकोपार्जन में डोम जाति के समक्ष आने वाले सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण करना है। हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण अंतिम लक्ष्य, मोक्ष प्राप्ति के प्राप्त करने में सहायक डोम जाति द्वारा शवदाह के अपने पारंपरिक व्यवसाय के निर्वाहन में निरंतर स्वास्थ्य समस्याओं, अत्यंत ताप में कार्य, दुर्गंधयुक्त नकारात्मक वातावरण में निवास, धुआ तथा शोर के मध्य जीवनयापन, का सामना करने के पश्चात भी समाज में इनके कार्यों को सदैव नजरअंदाज एवं अछूत मानकर इनका बहिष्कार एवं शोषण किया गया। वर्तमान अध्ययन समाज में डोम जाति के प्रमुख प्रकार्यात्मक योगदानों पर प्रकाश डालने पर केंद्रित है जिससे समाज में उनके प्रति व्याप्त नकारात्मक मनोवृत्तियों को समाप्त करके एवं सामाजिक न्याय, समानता, सामाजिक अधिकारों में समानता के माध्यम से उन्हें समाज के मुख्य धारा में सम्मिलित किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द- डोम जाति, कोविड-19, अस्पृश्यता, पवित्रता और प्रदूषण, पारंपरिक व्यवसाय शवदाह, संक्रमित शव, सामाजिक-आर्थिक स्थिति

प्रस्तावना

भारतीय समाज के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से ही भारतीय समाज की संरचना भिन्न-भिन्न असमान समूहों, वर्गों तथा जातियों में विभाजित है। भारतीय इतिहास में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान के आधुनिक समाज तक जाति को एक ऐसी धार्मिक नियोग्यता तथा पवित्रता एवं प्रदूषण के आधार पर परिभाषित किया जाता है जहां जाति प्रथा के उच्च पायदान पर स्थित जातियां सदैव निम्न जातियों पर शोषण, अत्याचार, भेदभाव करती आई है तथा समाज से इन जातियों को बहिष्कृत मानती रही है। वंशानुगत जाति निर्धारित के कारण इन जातियों को बंद समूह के रूप में भी परिभाषित किया जाता है जहां निम्न गतिशीलता के कारण जाति में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। श्रेष्ठता और अधीनता के अवधारणाओं के कारण जाति व्यवस्था में अनेक रूढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा पूर्वाग्रहों का जन्म हुआ जिसके माध्यम से उच्च वर्गों द्वारा अनेक ऐसे मूल्यों तथा प्रतिमाओं की रचना की गई जिसने भारतीय समाज के निम्न पायदान पर स्थित अनेक जातियों एवं समूहों को समाज के मुख्यधारा से ढकेल कर

हासिये पर रख दिया तथा समाज की एक बड़ी जनसंख्या निर्योग्यता तथा अस्पृश्यता की शिकार हजारों वर्षों तक रही। सामाजिक स्तरीकरण तथा पवित्रता और प्रदूषण से प्रभावित डोम जाति अनुसूचित जाति की ही एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो कि उत्तरी भारत के क्षेत्रों में बृहद रूप से फैली हुई है एवं जिनकी जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में लगभग 110350 है। डोम जाति के सदस्य वर्तमान समय में भी परंपरागत व्यवसाय लाशों को जलाना, शवों से संबंधित परिवारजनों से कर वसूलना, बांस की दौरी बनाना, आदि है। आधुनिक समय में भी यह जातियां अंधविश्वास, अशिक्षा, बेरोजगारी, भुखमरी शोषण आदि समस्याओं से जूझ रहे हैं इसलिए इन पर शोध इनके विकास तथा उत्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान अध्ययन उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में निवास करने वाले डोम जाति पर आधारित है। विश्वव्यापी महामारी के रूप में कोविड-19 संपूर्ण विश्व में व्याप्त रहा जिसने समस्त मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डाला। कोविड-19 के दौरान विश्व स्तर पर लगभग 67.5 करोड़ लोगों को संक्रमण हुए तथा लाखों की संख्या में नागरिकों की मृत्यु हुई। कोरोना वायरस ने केवल स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं को जन्म नहीं दिया बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को भी बढ़ाने का कार्य किया। बढ़ती हुई मृत्यु दर के कारण संपूर्ण विश्व में एक भयावह स्थिति बनी हुई थी जिसमें पुलिस तथा डॉक्टर की एक महत्वपूर्ण प्रकार्यात्मक भूमिका रही जिन्होंने राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर अपने प्राणों की चिंता किए बिना संक्रमित मरीजों का उपचार करके अपने कर्तव्यों का निर्वाहन किया। प्रस्तुत अध्ययन में केंद्रित डोम जाति जो वाराणसी के मणिकर्णिका तथा हरिश्चंद्र घाट पर निवास करती है तथा शवदाह का कार्य करते हैं। शवदाह के समय अत्यंत ताप, धुआ तथा शोर का सामना डोम सदस्यों को करना पड़ता है जिसके कारण यह निरंतर स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं से पीड़ित रहते हैं। कोविड-19 में मृत्यु तथा संक्रमण के भय से अपने ही परिवारजनों के संक्रमित शव का दाह-संस्कार संबंधित रिश्तेदार करने से घबरा रहे थे उस समय डोम सदस्यों ने अपने पारंपरिक व्यवसाय के कर्तव्यों का पालन करते हुए कोरोना के बचाव से अनभिज्ञ होते हुए तथा बिना किसी बचाव सामग्रियों के कोरोना से संक्रमित शवों का दाह संस्कार किया। हिंदू धर्म का महत्वपूर्ण अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति के प्राप्त करने में प्रकार्यात्मक भूमिका निर्वाहन के पश्चात भी समाज में डोम सदस्यों के कार्यों को सदैव नजरअंदाज किया गया तथा इनके योगदान की सराहना करने के बजाए इन्हें अछूत मानकर इनका बहिष्करण किया गया तथा समाज के उच्च जातियों ने इन्हें सदैव हाशिए पर रखा। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य डोम जाति के द्वारा कोविड-19 में किए गए प्रकार्यात्मक कार्यों जिसका समाज के संचालन में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है, पर प्रकाश डालना है।

साहित्यिक समीक्षा

मिथिलेश कुमार(2020) ने अपने शोध पत्र के माध्यम से अशिक्षा, सीमित गतिशीलता, सीमित अवसर, असहाय निर्भरता, गरीबी आदि समस्याओं से पीड़ित दलित महिलाओं की स्थिति का वर्णन किया है। केंद्र तथा राज्य द्वारा संचालित अनेक योजनाओं तथा कार्यक्रम, का एक सीमित अंश ही प्राप्त होना दलित महिलाएं आधुनिक काल में भी गरीबी की संस्कृति में जीवनयापन करने का एक प्रमुख कारण है। सामाजिक आंदोलन में दलित महिलाओं से संबंधित समस्याओं पर बल देना अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है वर्तमान समय में नारीवाद आंदोलनों में इस मुद्दे पर संगठित होकर विमर्श करने की आवश्यकता है। घनश्याम दास(2006) शोध में बताया कि जाति व्यवस्था के द्वारा आर्थिक पिछड़ेपन को स्थाई तथा संस्थाकरण करने के कारण अनुसूचित जातियों में भी निम्न पायदान पर स्थित डोम जाति में सरकारी सुविधाओं के पश्चात भी इनमें शिक्षा के प्रति उन्मुक्ता नहीं आ पाई है। उच्च वर्गों में स्थित डोम सदस्य भी वर्चस्व प्राप्त करने के पश्चात अपने समुदाय में ही मदद तथा जागरूकता का प्रसार नहीं करना चाहते हैं। कैलाश(2010) ने भारतीय समाज में उत्पीड़न तथा शोषण के लिए जाति प्रथा को उत्तरदाई बताया है संवैधानिक अधिकारों तथा शिक्षा के माध्यम से इनमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन उत्पन्न हुए हैं जिसके फलस्वरूप इनके पारंपरिक व्यावसायिक ढांचे का पतन तथा उच्च व्यवसायों में इनकी रूचि बढ़ रही है। शिक्षा के प्रसार से समाज में तार्किक तथा बौद्धिक दिशा में परिवर्तन हुए हैं एवं छुआछूत तथा सामाजिक दूरी में कमी आई है। आर.के. सिन्हा(1986) ने अनुसूचित जातियों की प्राथमिकता पर किए गए अपने अध्ययन के माध्यम से यह निष्कर्ष प्राप्त किया भारतीय समाज पर ब्राह्मणवादी प्रतिमानों तथा हिंदू मूल्यों अध्यारोपित होने के कारण उच्च जातियों में भेदभाव, अमानवीय दृष्टिकोण तथा शोषण की प्रवृत्तियां निहित है। समाज में सीमांत जातियों के के कल्याण हेतु ना केवल सरकारी नीतियों में परिवर्तन अपितु संपूर्ण समाज में नए युक्तिसंगत मूल्यों तथा प्रतिमानों को लागू करने की आवश्यकता है। आर.एस.खरे(1984) लखनऊ की नगरीय क्षेत्र में निवासित डोम जाति को परिवेश के आधार पर दो वर्गों में विभाजित करते हैं। पहला वर्ग आज भी अपने परंपरागत व्यवसाय तथा दूसरा वर्ग समाज के विभिन्न लोकतंत्र की सेवाओं में अपना योगदान देकर जीवन निर्वाह कर रहा है। निष्कर्ष: बताया गया कि अपने शैक्षणिक वैचारिकी के माध्यम से डोम जाति ने सामाजिक तथा सांस्कृतिक निर्योग्यताओं को दूर करने का प्रयास किया है तथा उच्च वर्गों के दृष्टिकोण में गतिशीलता के माध्यम से परिवर्तित करने के लिए बाध्य किया है वर्तमान में भी वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखे हैं जिसका कारण उनमें निम्न गतिशीलता दर विद्यमान है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. कोविड-19 के संक्रमण के दौरान शवदाह में डोम जाति के समक्ष आने वाली प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण करना।
2. कोविड-19 के दौरान डोम जाति के सदस्यों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची, वयक्तिक अध्ययन, एवं अवलोकन के माध्यम से संपन्न किया गया है जो कोविड-19 के समयकाल में डोम समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन करने में सहायक है। परिमाणात्मक तथ्यों के विश्लेषण हेतु चार्ट, टेबल आदि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग तथा गुणात्मक तथ्यों के विश्लेषण हेतु तथ्यों का गहन अध्ययन करके तार्किक तरीके से कोड को जोड़कर थीम बनाया गया है। द्वितीयक तथ्यों का संकलन जनगणना 2011 रिपोर्ट, सरकारी एवं गैर सरकारी रिपोर्ट, विषय से संबंधित पत्र पत्रिकाएं एवं विभिन्न शोध अध्ययनों का उपयोग करके अध्ययन का विश्लेषण किया गया है।

जनसंख्या

विश्व की सबसे प्राचीन शहर के रूप में विख्यात वाराणसी जो अपने आध्यात्मिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है प्रस्तुत अध्ययन वाराणसी जनपद में निवास करने वाले डोम जाति जो मुख्यता हरिश्चंद्र घाट और मणिकर्णिका घाट के निकट स्थित आवास स्थलों में निवास करती है एवं जिनका कार्य शवदाह करना, दौरी और सूप निर्माण करना है प्रस्तुत अध्ययन कोविड महामारी के दौरान शवदाह में डोम जाति के समक्ष आने वाली सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं पर आधारित है अध्ययन में सम्मिलित 82.5% जनसंख्या पुरुष एवं 17.5% उत्तरदाता महिला है जिनमें 72.5% जनसंख्या शिक्षित एवं 17.5% जनसंख्या अशिक्षित है।

सामाजिक स्थिति

संपूर्ण विश्व में बढ़ते कोविड-19 संक्रमण ने केवल स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं को नहीं बढ़ाया बल्कि अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दुष्परिणामों को भी जन्म दिया बढ़ती महामारी ने समाज में व्याप्त असमानता, भेदभाव, एवं शोषण में वृद्धि करने का कार्य किया है घाटों पर कार्यरत डोम समुदाय ने जबरदस्ती कार्य, बलात् श्रम, शोषण एवं अत्याचारों के माध्यम से शवदाह करवाने की पुष्टि की है सरकारी कर्मचारियों द्वारा डोम समुदाय को बिना बचाव सामग्रियों को उपलब्ध करवाएं संक्रमित शवों का दाह संस्कार करवाया गया जिसके लिए अनेकों बार उन्हें उचित मजदूरी भी प्रदान नहीं की गई महामारी के आपातकाल में अनेकों ऐसी घटनाएं देखने को मिलती है जिसने समाज में व्याप्त एकजुटता एवं नैतिकता के पतन को दर्शाया है।

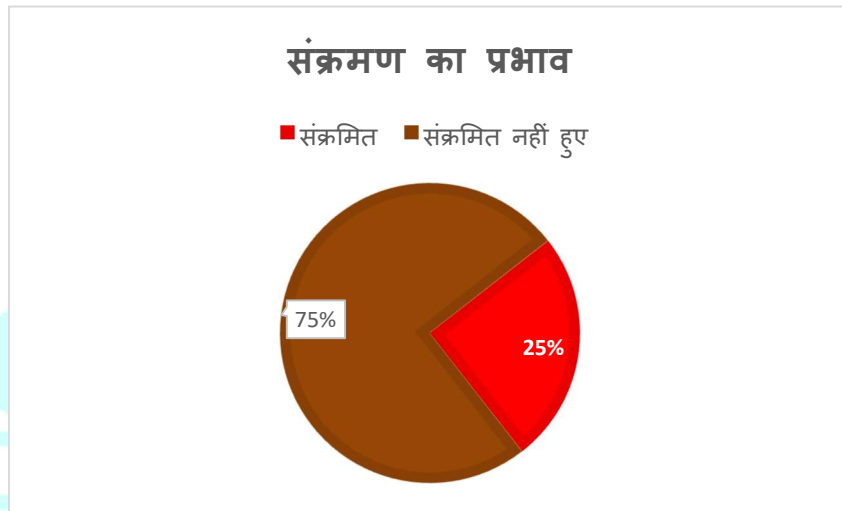
शवदाह में समस्याएं

वाराणसी की दो प्रमुख मणिकर्णिका घाट हरिश्चंद्र घाट को श्मशान घाट के रूप में जाना जाता है प्राचीन काल से ही इन घाटों पर नियमित शवों का दाह संस्कार किया जाता है रहा है। मणिकर्णिका घाट एवं हरिश्चंद्र घाट अत्यधिक घनी बस्तियों के मध्य अवस्थित है कम क्षेत्रफल में बसी होने के कारण इन घाटों पर धूल-धुआं निकास की समस्याएं, पेयजल की समस्याएं, बढ़ते प्रदूषण आदि समस्याएं वहां पर निवासी डोम सदस्यों के लिए हानिकारक हैं। बरसात के समय घाटों पर दुर्गंध, कूड़ा-कचरा तथा प्रदूषण की मात्रा और अधिक बढ़ जाती है तथा डोम सदस्यों की आय में गिरावट भी आ जाती है। हरिश्चंद्र घाट पर वर्तमान समय में भी एक भी इलेक्ट्रिक शवदाह यंत्र के ना होने के कारण डोम सदस्यों को प्रतिदिन उच्चतम तापमान में अपने कार्यों को करना पड़ता है घाटों के पूर्ण निर्मित ना होने के कारण बरसात के समय में पानी भर जाना आदि समस्याएं घाटों पर व्याप्त हैं। कोविड-19 के दौरान निरंतर बढ़ती संख्या के कारण डोम सदस्य अपने घरों के सामने गलियों में शवदाह करने पर विवस थे जिसके कारण उन्हें अनेक स्वास्थ्य समस्याओं, मानसिक दुविधा एवं अनेक सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा था।

स्वास्थ्य समस्याएं

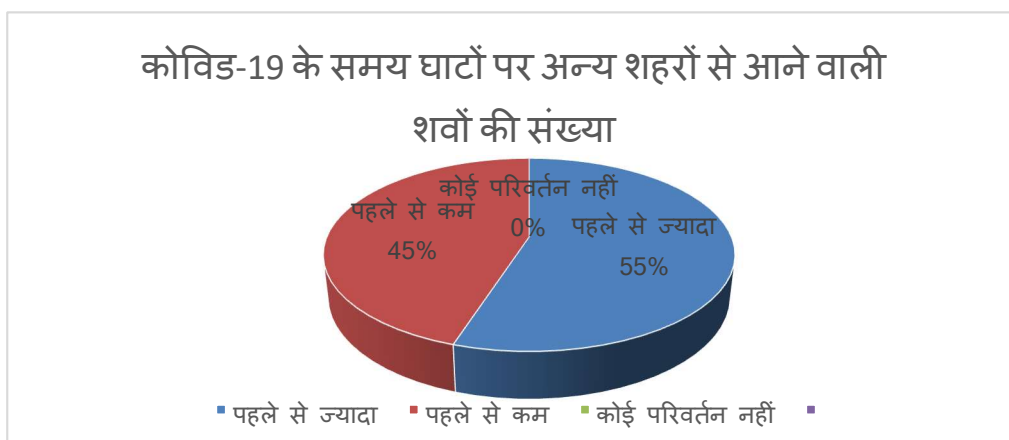
प्रतिदिन घाटों का शवदाह करना, निरंतर दुर्गंधयुक्त वातावरण में निवास करना, धुआ और धूल के मध्य संपूर्ण जीवन यापन करना, शोर शराबे एवं नकारात्मक वातावरण के मध्य रहने हेतु धूम्रपान में संलिप्तता के कारण अधिकतम डोम सदस्य स्वास्थ्य समस्याएं जैसे टी.बी., दमा, हैजा, टाइफाइड, अनेक मानसिक रोगों एवं नेत्र संबंधित समस्याओं से सदैव पीड़ित रहते हैं। महामारी के समय काल में स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता एवं जागरूकता के अभाव के कारण ना केवल घाटों पर कार्यरत डोम सदस्य पीड़ित थे बल्कि उनके संपूर्ण समुदाय और परिवार पर भी संक्रमण का खतरा बना हुआ था आर्थिक स्थिति के खराब होने के कारण अधिकतर डोम सदस्य सरकारी अस्पतालों में अपना एवं परिवार का उपचार करवाते हैं। उचित उपचार ना होने के कारण 35% उत्तरदाताओं ने परिवार में सदस्यों की संक्रमण से मृत्यु की पुष्टि की है।

कोविड-19 के संक्रमण का प्रभाव:-



पुलिस और चिकित्सकों की तरह अपने पारंपरिक कर्मकांड के निर्वहन हेतु डोम जाति बिना किसी चिकित्सकीय जागरूकता एवं बचाव सामग्रियों के अनुपलब्धता के अपरिचित होने के पश्चात भी कोविड-19 से संक्रमित शवों का दाह संस्कार करके समाज के प्रकार्यात्मक संचालन में अपनी प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया। कोविड के दौरान संक्रमित शवों को जहां उनके परिवारजन छूना तक नहीं चाहते थे वहां डोम सदस्यों द्वारा उन शवों का दाह-संस्कार करना डोम जाति का अपने धर्म के प्रति व्याप्त आस्था एवं कर्तव्यनिष्ठता को प्रदर्शित करता है। अध्ययन में सम्मिलित 25% जनसंख्या संक्रमण की पुष्टि करती है जबकि 75% सदस्यों का मानना है की जागरूकता के अभाव के कारण यदि संक्रमित हुए थे तो पता नहीं चल पाया एवं पूर्ण स्वस्थ हो गए।

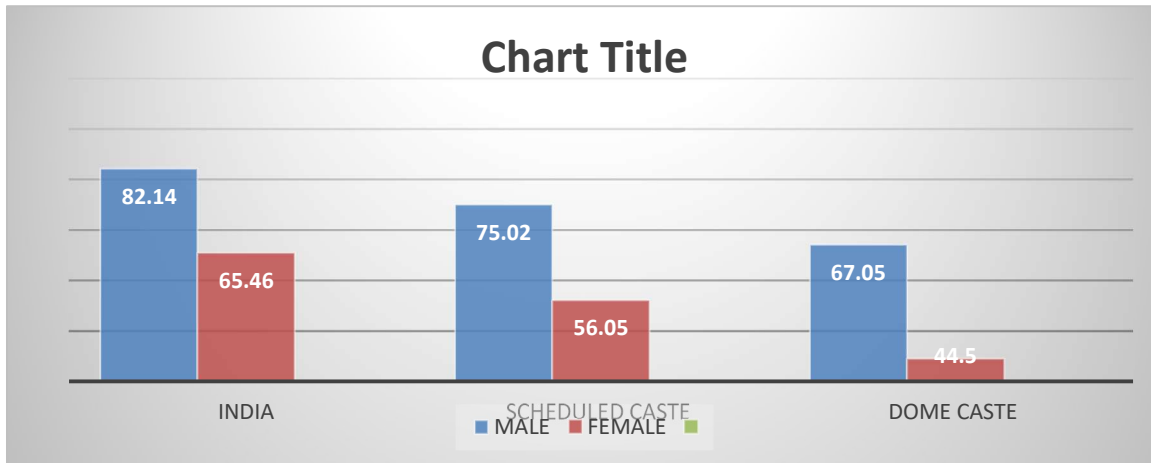
कोविड-19 के समय घाटों पर अन्य शहरों से आने वाली शवों की संख्या:-



लॉकडाउन के दौरान बढ़ती संक्रमण एवं घटती स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं ने संपूर्ण विश्व में एक दहशत भरे माहौल को जन्म दिया करोड़ों की संख्या में लोग संक्रमित हुए एवं लाखों की संख्या में लोगों ने अपने प्राण गवाये। बढ़ती मृत्युदर ने संपूर्ण विश्व को श्मशान बना दिया जहां लाशों की अग्नि बुझने का नाम ही नहीं ले रही थी। अध्ययन के माध्यम से ज्ञात होता है कि हरिश्चंद्र घाट एवं मणिकार्णिका घाट पर बढ़ती शवों की संख्या के कारण डोम सदस्य गलियों में शवदाह करने को विवश थे शहरों में लॉकडाउन की पाबंदियों के कारण अन्य शहरों से शव नहीं आते थे किंतु स्वास्थ्य सेवाओं के

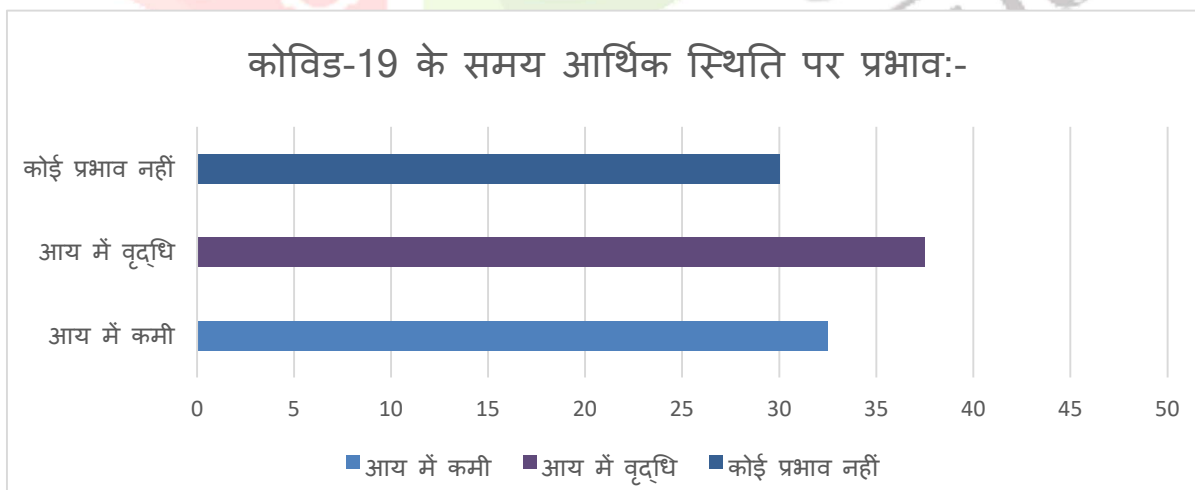
लिए आए परिजन संक्रमित मृतक शरीर का दाह संस्कार घाटों पर ही कर देते हैं अध्ययन में सम्मिलित 55% उत्तरदाता मानते हैं कि कोरोना काल में अन्य शहरों से शवों की संख्या में कमी आई।

शिक्षण समस्याएं



जाति प्रथा के जटिल स्तरीकरण फलस्वरूप भारत का एक बड़ा नागरिक समुदाय सदियों से शिक्षा के क्षेत्र में बहिष्कृत एवं अस्पृश्य रहा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात समाज सेवकों एवं समाज वैज्ञानिकों के अनेक जागरूकता अभियान एवं भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित समावेशित सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों के पश्चात दलित जातियों की प्रतिभागिता शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती दिखाई देती है किंतु अभी भी यह नामांकन दर अन्य समुदाय के छात्र-छात्राओं अपेक्षा निम्नतम है। डोम जाति में कम आयु में घाटों, दुकानों अन्य कुटीर उद्योगों में कार्य करना, कम आयु में विवाहित होना एवं विभिन्न धार्मिक रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वासों के कारण शिक्षा के क्षेत्र में संलग्न नहीं हो पाते हैं। कोविड-19 के दौरान हुए शिक्षा के डिजिटल विभाजन के कारण डोम जाति की नामांकन दर और निम्न हो गई क्योंकि डोम छात्र-छात्राओं के पास अपने शिक्षण कार्य को बढ़ाने के लिए ऑनलाइन संसाधन उपलब्ध नहीं थे आर्थिक स्थिति अच्छी ना होने के कारण वे उन्हें खरीदने में भी असमर्थ थे। अध्ययन के दौरान मात्र 32.5% सदस्य ऐसे थे जो इंटरनेट से परिचित थे एवं उसका दैनिक उपयोग करने में सक्षम थे।

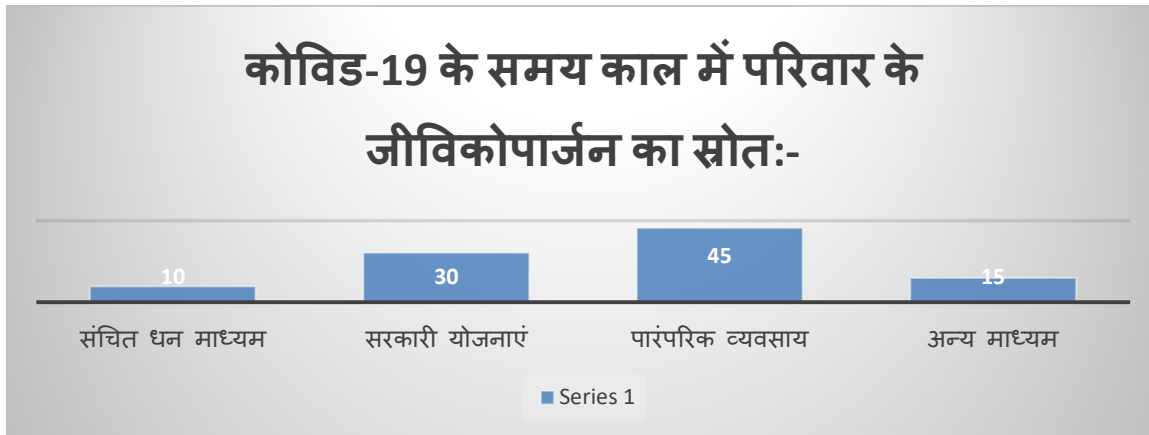
कोविड-19 के समय आर्थिक स्थिति:-



कोविड संक्रमण के प्रसार को अवरुद्ध करने के लिए भारत सरकार ने 20 मार्च 2020 को संपूर्ण भारत में लागू की घोषणा किया जिसके परिणामस्वरूप नागरिकों में मानसिक तनाव, आर्थिक समस्याएं, रहन-सहन तथा अपने परिवार के जीविकोपार्जन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। भिन्न भिन्न राज्यों और शहरों से लोग अपने घरों की तरफ पलायन करने लगे जिसके कारण संक्रमण वृद्धि, भुखमरी, स्वास्थ्य समस्याएं, भीषण दुर्घटना जैसे आपातकालीन स्थितियों में और बढ़ावा मिलने लगा। गतिशीलता की निम्न स्थिति होने के कारण अध्ययन क्षेत्र में निवासी डोम जाति अपने स्थाई निवास स्थान पर ही रहते हैं अध्ययन में सम्मिलित 32.5% जनसंख्या मानते हैं कि बढ़ते शवों की संख्या के कारण उनकी

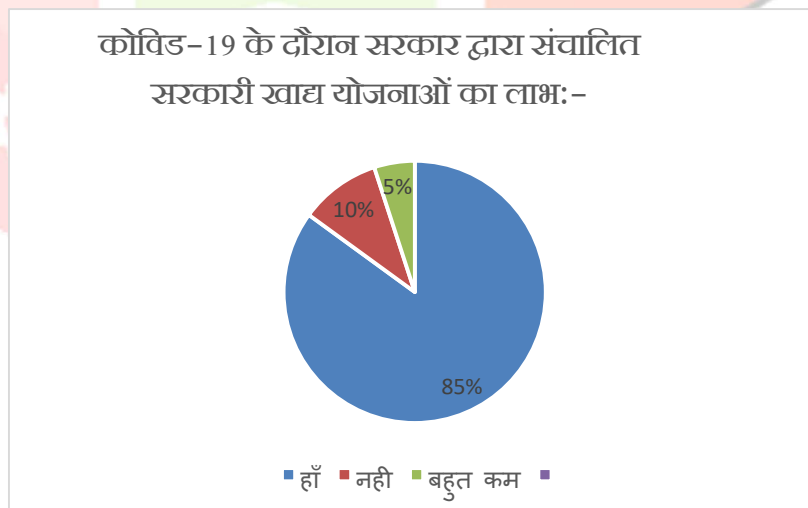
आर्थिक स्थिति में वृद्धि हुई, 37.5% उत्तरदाता का मानना है कि बलात श्रम मजदूरी, बढ़ती महंगाई एवं स्वास्थ्य समस्याओं के बढ़ने के कारण आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा एवं 30% उत्तरदाताओं का मानना है कि उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

कोविड-19 के समय जीविकोपार्जन:-



कोविड-19 के दौरान बढ़ती महंगाई एवं स्वास्थ्य सेवाओं के लगातार गिरावट के कारण परिवार के मुखिया के समक्ष संपूर्ण परिवार का जीविकोपार्जन कर पाना एक प्रमुख समस्या बनी हुई थी परिवार के जीविकोपार्जन के लिए संपूर्ण डोम समाज घाटों पर शवदाह में संलग्न था। अध्ययन के माध्यम से अवगत होता है कि 45% उत्तरदाता अपने परिवार का जीविकोपार्जन घाटों पर कार्य करके, 15% सदस्य कुटीर उद्योगों, दुकान एवं अन्य स्थानों पर कार्य करके, तथा कर्ज के माध्यम से अपना जीवन निर्वाह कर रहे थे 10% सदस्य ऐसे भी थे जो अपने संचित धन के माध्यम से अपनी जीविका चला रहे थे अध्ययन में 30% सदस्य का मानना है कि सरकारी क्रियान्वयन योजना जीवन निर्वाह में काफी सहायता की।

कोविड-19 के दौरान सरकार द्वारा संचालित सरकारी खाद्य योजनाओं का लाभ:-



कोविड-19 समय काल में स्वास्थ्य समस्याओं के साथ-साथ बेरोजगारी, भुखमरी, बलात प्रवासन जैसे सामाजिक समस्याओं से संपूर्ण विश्व पीड़ित हुआ समाज में संतुलन बनाए रखने एवं अराजकता को रोकने के लिए भारतीय सरकार द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया। खाद्य योजना भारतीय समाज के निम्न एवं मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए एक वरदान साबित हुआ क्योंकि उस समय निम्न वर्गीय परिवार अपने तथा परिवार के लोगों का जीविकोपार्जन करने में अनेक समस्याओं से ग्रसित था। डोम जाति में से 85% उत्तरदाताओं ने इस योजना से लाभान्वित होने की पुष्टि की जबकि 10% सदस्य लाभान्वित ना होने एवं 5% सदस्य योजना से अपरिचितता होने की पुष्टि की।

निष्कर्ष

प्राचीन काल से ही दलितों में सर्वाधिक निम्न पायदान पर स्थित डोम जाति समाज से बहिष्कृत, शोषण एवं भेदभावपूर्ण जीवनयापन करती आ रही है। समाज में महत्वपूर्ण प्रकार्यात्मक योगदान एवं अपना सर्वस्व प्रदान करने के पश्चात भी यह जाति समाज की दृष्टिकोण में अस्पृश्यता एवं नकारात्मक मनोवृत्ति का शिकार रही है। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से अवगत होता है कि कोविड संक्रमण से बचाव के अनभिज्ञता एवं जागरूकता के अभाव के पश्चात भी डोम जाति ने अपने कर्तव्यों का पूर्ण निर्वाहन किया है। महामारी के समय काल में बढ़ती भुखमरी, प्रवासन, संक्रमण समस्याओं एवं आपातकालीन स्थितियों में वृद्धि के मध्य परिवार का भरण-पोषण एवं जीवनयापन एक जटिल दायित्व था जिसके निर्वाहन में सरकार द्वारा संचालित खाद्य योजनाओं का प्रमुख तथा सकारात्मक भूमिका रही है। दुर्गन्धयुक्त वातावरण, प्रतिकूल वातावरण, उच्च ताप में श्रम, धूल-धुआं एवं प्रदूषण के मध्य अपना प्रतिदिन का जीवनयापन व्यतीत करने वाली डोम जाति निरंतर स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित रहती है जिसके कारण कोविड संक्रमित होने के पश्चात भी इन्हें पता नहीं लग पाया। डिजिटल माध्यमों का उपयोग करने में जागरूक एवं सक्षम न होने, डिजिटल शिक्षा में बढ़ोतरी एवं पारंपरिक शिक्षा में कमी के कारण डोम सदस्यों के शिक्षा ग्रहण में अवरोध उत्पन्न हुआ। महामारी के दौरान बढ़ती संख्या नकारात्मक वातावरण एवं दुर्गन्धयुक्त पर्यावरण ने डोम सदस्यों को मानसिक समस्याओं से ग्रसित किया बढ़ती संक्रमित शवों की संख्या, आपातकालीन स्थितियों में और बढ़ावा के कारण डोम सदस्य गलियों में शवदाह करने पर विवश थे। अनेक कष्टकारी चुनौतीपूर्ण स्थितियों का कर्तव्यपरायणता से पालन करने के पश्चात भी वर्तमान समय में डोम सदस्य अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक चुनौतियों से जकड़े हुए हैं। समाज में व्याप्त इनके प्रति नकारात्मक मनोवृत्तियों के पतन हेतु इनका शिक्षित होना आवश्यक है साथ ही साथ सरकार द्वारा क्रियान्वित योजनाओं को धरातलीय स्तर पर लागू करने की भी आवश्यकता है जिससे अंतिम छोर पर खड़ा व्यक्ति, समुदाय, समूह अथवा जाति प्रथम छोर की भांति ही सामाजिक न्याय, समानता, सामाजिक अधिकारों एवं समाज कल्याण हेतु क्रियान्वित योजनाओं का समुचित लाभ प्राप्त कर सके एवं समाज के मुख्यधारा में सम्मिलित हो सके।

संदर्भ सूची

1. Acharya, Sumana, and Saho, Harlhar (2019) "Education among scheduled caste population In India", Indonesian journal of geography.
2. Betelle, A. (1965) "Cast, Class and Power", Berkeley: University of California Press.
3. Chauhan, B.R. (1975) "Scheduled caste and education", Meerut: Annu publication.
4. Das, A.K. (1968) "Occupational pattern through generation In rural areas of West Bengal", Calcutta: trips dept. gov. of Bengal.
5. Dumont, Louis, (1970) "Homo Hierarchical", University of Chicago Press.
6. Gangrade, K.D. (1974) "Educational problems of the Scheduled Caste In Haryana"
7. Gupta, A.K. (1984) "Caste hierarchy and social change", New Delhi, Jyotsna Prakashan.
8. Ishfaq Ahmad Bhat (2022) "A Study on Academic achievement of scheduled caste and students. Journal of the Social Sciences.
9. Kumari, Shanta (1984) "scheduled caste and welfare measures", New Delhi, a classical publishing house.
10. Khare, R.S. (1984) "The untouchable of himself", Cambridge: Cambridge University Press.
11. Kumari, S. (2021) "Understanding of Stigmatization death Amid Covid-19 In India: A Sociological Exploration, Sage publication.
12. Kumari, Sarita, & Guite nemthianngai, (2019) "Occupational health Issues In funeral works: A study of dome caste In Varanasi city, Uttar Pradesh.
13. Majumdar, D.N. (1958) "Races and culture of India", Bombay.

14. Mandal, Sandeep. (2021) "caste In the tlme of the covld-19 pandemic", Sage publication.
15. Paswan, Amarnath. (2013) "Journal of Dalit and Tribal Studies", Varanasi.
16. Rai, Ankita & Prof. Jahanara (2021) "A Study on the Socio-Economic condition of doms In Varanasi District of Uttar Pradesh Vol-9 (IJARESM)
17. Rao, Usha (1981) "Deprived Caste In Indla", Allahabad: Chugh publication.
18. Shah, Akash, "Critical analysis on Reservation policy," legal service In India.
19. Shyam lal, K.S Saxena (1998) "Ambedkar Nagar and nation building", New Delhi: Rawat publication.
20. Sinha, R.K. (1986) "Alienation samaj and Scheduled Caste", Delhi: Manx publicatlon.
21. Srinivas, M.N. (1955) "Social structure of Masor vllage", Bombay: Asia publication house.
22. Vakil, A.K. (1985), "Reservation Policy and Scheduled Castes In India", Ashish PublishIng House, New Delhi.
23. Vishwanath, G. and Nursing, R. (1985) "Scheduled Caste: A study In achievement", Hyderabad: scientific service.
24. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों की समस्याएं, एनसीईआरटी आधार पत्र, प्रथम संस्करण (2010)
25. कैलाश (2010) "वर्तमान समय में अनुसूचित जातियों में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन"
26. कुमार, मिथिलेश (2020) "भारत में दलित महिलाओं की दयनीय स्थिति; एक राजनीतिक विश्लेषण", इंटरनेशनल जनरल ऑफ एडवांस एकेडमिक स्टडीज.
27. दास, घनश्याम राम, (2006) "जाति का सामाजिक वैज्ञानिक अध्ययन वाराणसी जनपद पर आधारित" पूर्वांचल विश्वविद्यालय.
28. रावत, हरीकृष्ण, (1998) "समाजशास्त्रीय कोष", जयपुर; रावत पब्लिकेशन.
29. श्रीवास्तव, नीलम. (1988) "वाराणसी स्थित अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षणिक समस्याएं" महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी.
30. शुक्ला, शशांक (2022) "वाराणसी के डोम जाति की सामाजिक सांस्कृतिक प्रस्थिति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.